

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-६८

नित नवल वीरेन्द्र मल्लिक

६८

विदेह | गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय | खण्ड-६८

विदेह | आलोचना-संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-६८

‘नित नवल वीरेन्द्र मल्लिक’ : कविता, काव्यविचार आ
रंगालोचना

समीक्षक आ सम्पादक : आशीष अनचिन्हार

विदेह • २०२६

साहित्यिक समीक्षा आ सम्पादकीय विवेचन

प्रकाशन-विवरण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड ६८ । समीक्षक आ सम्पादक :
आशीष अनचिन्हार ।

समीक्षाधीन पोथी : गजेन्द्र ठाकुर । 'नित नवल वीरेन्द्र मल्लिक' । २०२६ ।

प्रथम प्रकाशन : २०२६ । भाषा : मैथिली । मुद्रण-विन्यास : ६ × ९ इञ्च ।

© २०२६ गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर । सर्वाधिकार सुरक्षित ।

सम्पादकीय भूमिका

पाँच अध्ययनाधीन ग्रन्थक माध्यमें वीरेन्द्र मल्लिकक कवि, समीक्षक आ रंगचिन्तक-रूप गजेन्द्र ठाकुरक 'नित नवल वीरेन्द्र मल्लिक'मे उपस्थित अछि । जनप्रतिरोधक काव्यभाषासँ विद्यापतिक प्रेम-सौन्दर्य धरि विषयक व्याप्ति बहुस्तरीय अछि ।

एहि खण्डमे कविता आ इतिहासक प्रमाणक अन्तर, काव्यबिम्बक स्वतन्त्रता, नाट्यपाठ आ प्रदर्शनक सम्बन्ध तथा प्रभाव-अध्ययनक सीमाक परीक्षण कएल गेल अछि । गजेन्द्रक ग्रन्थक निर्णयक पाठक समक्ष पुनःविचारयोग्य बनाओल गेल अछि ।

समालोचनाक मूल आधार गजेन्द्र ठाकुरक उक्त प्रकाशित अध्ययन अछि । पुस्तकमे उपस्थित साहित्यिक व्याख्याक मूल्याङ्कन ओकर अपन पाठ-विन्यास, सन्दर्भ आ प्रमाणक अनुसार कएल गेल अछि । मूल पुस्तकक सम्पूर्ण पाठ एहि खण्डमे पुनर्मुद्रित नहि अछि ।

विस्तृत अनुक्रमणिका : खण्ड ६८

१. 'नित नवल वीरेन्द्र मल्लिक'क आलोचनात्मक परिधि.....	४
२. 'अग्नि-शिखा' : अग्निक अर्थक बहुलता.....	४
३. कविता-वक्ता आ ऐतिहासिक साक्ष्यक सीमा.....	५
४. 'अथातो काव्य जिज्ञासा' : कविता अपन प्रयोजन पूछैत अछि.....	६
५. दू कवितासंग्रहक परस्पर सम्बन्ध.....	६
६. 'प्रथम पुरुष' : आलोचकक आत्मसमीक्षा.....	७
७. रामकाव्य, बिम्ब आ अनुशीलनक प्रमाण.....	७
८. 'नाटक आ रंगमंच' : पाठसँ प्रदर्शन धरि.....	८
९. विद्यापतिक प्रेम आ सौन्दर्य : नौ अध्यायक मूल प्रश्न.....	८
१०. प्रभाव, परम्परा आ प्रमाणक मर्यादा.....	९
११. पचपन कविताक समीक्षामे संख्या आ अर्थ.....	९
१२. आलोचनाक आलोचना : 'प्रथम पुरुष' सँ सीख.....	१०
१३. विद्यापतिक सौन्दर्य आ समाजक अन्तर्विरोध.....	१०
१४. व्यापक निष्कर्ष.....	११

१. 'नित नवल वीरेन्द्र मल्लिक'क आलोचनात्मक परिधि

गजेन्द्र ठाकुरक 'नित नवल वीरेन्द्र मल्लिक' पाँच पुस्तकक विस्तृत अनुशीलन अछि—'अग्नि-शिखा', 'अथातो काव्य जिज्ञासा', 'प्रथम पुरुष', 'नाटक आ रंगमंच : प्रकृति आ प्रतिमान' आ 'प्रेम सौन्दर्य विधायक विद्यापति'। कविता, काव्य-आलोचना, रंगमंच आ विद्यापति-विमर्शक ई परिधि असाधारण व्यापक अछि। एकटा रचनाकारक कविताक भावसँ हुनकर आलोचनात्मक विवेक धरि जाएब गजेन्द्रक पुस्तकक मुख्य रचनात्मक प्रयत्न अछि। समीक्षा करैत समय एतबा भेद बचौने राखब चाही जे वीरेन्द्र मल्लिकक मौलिक कविता आ हुनकर आलोचनात्मक गद्य अलग तरहक सत्य-दावा करैत अछि।

पहिल दू कवितासंग्रहमे जनजीवन, संघर्ष, राजनीतिक व्यंग्य, प्रकृति आ साहित्यक दायित्वक प्रश्न प्रमुख अछि। 'प्रथम पुरुष'मे आलोचनाक मानदण्ड, रामकाव्य, बिम्ब आ आधुनिक कविता विचाराधीन अछि। रंगमंच सम्बन्धी अध्ययनमे पाठ आ प्रदर्शनक दूरी उभरैत अछि; विद्यापतिक ग्रन्थमे प्रेमक सौन्दर्यशास्त्र, मनोविज्ञान आ लोकचेतना। गजेन्द्र प्रत्येक पुस्तककेँ स्वतन्त्र खण्ड दैत छथि, तथापि एकरे संग लेखकीय चिन्तनक निरन्तरता खोजैत छथि।

एहि पुनर्पाठमे हमर केन्द्र समीक्षाधीन पाँचो पुस्तक नहि, गजेन्द्र ठाकुरक हुनका पर कएल आलोचना अछि। कोनो कविता सामाजिक न्याय पर लिखल अछि तँ ओकर उद्देश्यक समर्थन पर्याप्त नहि; बिम्ब, लय, शब्दक सघनता आ वक्ताक स्थिति सेहो मूल्याङ्कनक विषय अछि। कोनो आलोचनात्मक निबन्ध विद्वत्सन्दर्भ दैत अछि तँ ओकर निष्कर्षक प्रमाण सेहो जाँचल चाही।

२. 'अग्नि-शिखा' : अग्निक अर्थक बहुलता

गजेन्द्र 'अग्नि-शिखा'क मूल अनुक्रमणिकामे पचास प्रविष्टि आ पाँच संयुक्त प्रविष्टिक कारण पचपन स्वतन्त्र कविताक भेद पर विशेष ध्यान दैत छथि। ई गणनात्मक सावधानी प्रशंसनीय अछि। अनुक्रमणिकाक शीर्षकसंख्या आ वास्तविक रचनासंख्या एक नहि होइत; कवितावार मूल्याङ्कन करैत काल एहि भेदकेँ बचेनाइ शोधपद्धतिक बुनियादी शर्त अछि।

'अग्नि-शिखा'क आगि एकरूप क्रोधक रूपक नहि। 'शहरसँ गाम धरि'क विद्रोहक इच्छा, 'साँझ'क सौन्दर्य, 'नक्सलाइट'क लाल प्रकाश आ शीर्षक कविताक सामाजिक शल्य-संकेत आगिक अलग रूप दैत अछि। गजेन्द्रक

विवेचन एहि बहुअर्थकें देखबैत अछि। मुदा प्रतीकक मुक्त विस्तारकें काव्य-साक्ष्यसँ जोड़ल जाए; प्रत्येक लाल रंग अथवा गरम वस्तुकें समान राजनीतिक अर्थक प्रमाण मानल जाए तँ कविताक आन्तरिक भिन्नता नष्ट होयत।

कवि भूख, श्रम, विस्थापन, मैथिली भाषिक अधिकार आ नागरिक असहमतिक उल्लेख करैत छथि। गजेन्द्र एकरा जनपक्षधर काव्य-दृष्टि सँ पढ़ैत छथि। एतय आलोचकक जिम्मेदारी दुहरी अछि : सामाजिक संवेदनाक महत्त्व देखाएब आ घोषणात्मक पाँतिक कलात्मक दुर्बलता पर सेहो दृष्टि रखब। जनपक्षधरता आलोचनाक छूटपत्र नहि; साहित्यक राजनीतिक नैतिकता आ कलात्मक संरचना दुनू पर जाँच होएब चाही।

३. कविता-वक्ता आ ऐतिहासिक साक्ष्यक सीमा

गजेन्द्रक पुस्तकमे एक आवश्यक सावधानी अछि : कविता भीतरक 'हम', 'अहाँ' वा ऐतिहासिक व्यक्तिक उल्लेखकें कविक आत्मकथा अथवा स्वतन्त्र ऐतिहासिक घटना नहि मानल गेल अछि। ई भेद विशेष महत्त्वपूर्ण अछि जखन कविता हिंसा, आंदोलन वा राजनीतिक संघर्षक भाषा प्रयोग करैत अछि। काव्य-वक्ता सामाजिक सचेतनाक रूपक बनि सकैत अछि; ओकर कथन सीधे लेखकक सार्वजनिक घोषणा नहि।

एहि कारण आलोचना लेल कथात्मक परिस्थिति, बिम्बक क्रम आ विडम्बनाक स्वर पहिचानब जरूरी अछि। प्रतिरोधक आगि कखन न्यायसंगत क्रोध, कखन भय, कखन विनाशक मोह बनैत अछि—एहि अन्तरमे कविताक नैतिक गम्भीरता अछि। गजेन्द्रक अध्ययन कतिपय स्थलक द्वन्द्वक उल्लेख करैत अछि। भविष्यक पुनर्पाठमे प्रत्यक्ष कविता-अंशक सीमित उदाहरणसँ भाषा आ विचारक सम्बन्ध अधिक स्पष्ट कएल जा सकैत अछि।

कवितामे स्त्री-पात्र वा उपेक्षित समुदायक उपस्थिति मात्र प्रतिनिधित्वक पर्याप्त प्रमाण नहि। ओ पात्र बोलैत अछि कि प्रतीक बनि रहि जाइत अछि, से परखब चाही। एहने ठाम लेखकक जनपक्षधर आग्रह आ काव्यशिल्पक परिणामक बीच दूरी आलोचककें महत्त्वपूर्ण प्रश्न दैत अछि।

४. 'अथातो काव्य जिज्ञासा' : कविता अपन प्रयोजन पूछैत अछि

दोसरा संग्रहमे कविता स्वयं कविता होएबाक प्रश्न उठबैत अछि। 'अथातो काव्य जिज्ञासा', 'कविता बिकबा लागै तैयार', 'वाक्-विमर्श' आ 'अथ कविता उवाच' सन शीर्षक कविताक बाजार, भाषा आ सामाजिक दायित्वक बहसक केंद्र अछि। गजेन्द्र एहि आत्मपरीक्षणकें संग्रहक आधारभूत स्वर मानैत छथि। कविता जँ स्वयं अपन मूल्य पूछैत अछि, तखन साहित्यक सार्वजनिक स्थिति पर आलोचना करबाक नव संभावना बनैत अछि।

आधुनिक जीवनक विसंगति, पर्यावरण, विकास, नगर, बाजार आ लोकतन्त्र पर कविक चिन्ता एकहि स्वरमे नहि। कखनो तीक्ष्ण व्यंग्य, कखनो करुणा, कखनो चेतावनी आ कखनो शिल्पक आत्मसंशय उपस्थित होइत अछि। गजेन्द्रक कवितावार समीक्षा एहि विविधता पर विस्तृत विचार दैत अछि। मुदा संग्रहक प्रत्येक कविताकें समाजसुधारक प्रमाण बनाकऽ देखलासँ काव्यक निजी लय आ भावक अस्पष्टता कम भऽ सकैत अछि।

कविताक भाषा जखन स्वयं बिकाउ माल बनबाक भय व्यक्त करैत अछि, तखन आलोचकक अपन भाषा सेहो जाँचक विषय बनैत अछि। अत्यधिक वैचारिक वर्गीकरण जँ कविताक अनिश्चय समाप्त करय, तँ समीक्षा ओही प्रकारक वस्तुकरणक भाग बनि सकैत अछि जकर विरोध कवि करैत छथि। एही विचार सँ गजेन्द्रक समीक्षा पर एक आत्म-प्रश्न उठैत अछि : सिद्धान्त कविता खोलैत अछि कि तयशुदा अर्थमे बाँधि दैत अछि?

५. दू कवितासंग्रहक परस्पर सम्बन्ध

'अग्नि-शिखा' आ 'अथातो काव्य जिज्ञासा'मे सामाजिक यथार्थक निरन्तरता अछि, मुदा प्रथम संग्रहक तीव्र प्रतिरोधक भाषा दोसरा संग्रहमे कला आ जीवनक अन्तर्सम्बन्धक अधिक आत्मपरीक्षक स्वर ग्रहण करैत अछि। गजेन्द्रक दूनू विस्तृत अध्यायक समग्र लाभ ई अछि जे पाठक काव्य-विचारक परिवर्तन पहचानि सकैत अछि।

एहि तुलनामे काल, प्रकाशन-स्थितिक अन्तर आ रचनाक सम्भव आरम्भिक प्रसंग स्पष्ट होए तँ विकासक दावा अधिक प्रमाणयुक्त बनत। विषयमे साम्य भेटलासँ कवि समान स्वरमे लिखैत रहलाह, एहन निष्कर्ष नहि निकलब चाही।

भाषा आ छुन्दमे आलेल भेद स्वतंत्र साक्ष्य अछि। गजेन्द्रक काव्यपठन एहि शोधकें अगिला पायदान दैत अछि।

६. 'प्रथम पुरुष' : आलोचकक आत्मसमीक्षा

वीरेन्द्र मल्लिकक 'प्रथम पुरुष' कविताक बारेमे लिखल निबन्धसभक संग्रह अछि। गजेन्द्र एहि पुस्तकक आठ मुख्य अध्याय आ एक साक्षात्कारपर विचार करैत छथि। परम्परा-प्रयोग, मैथिली काव्यक प्रवृत्ति, 'सुभद्र-हरण'क बिम्ब, रामकाव्य, 'अध्यात्मरामायण' आ 'रामचरितमानस'क प्रभाव, आलोचनाक संकट आ समकालीन कविताक प्रश्न पर पुस्तकक विचार पसरल अछि। एकर कारण मल्लिक केवल काव्य-सर्जक नहि, अपन साहित्यिक परिवेशक परीक्षण करनिहार आलोचक सेहो देखाइत छथि।

गजेन्द्र परम्परा आ आधुनिकताकें निश्चित विरोधी कोटिमे नहि रखैत। ओ देखबैत छथि जे नव रचना पूर्ववर्ती भाषिक आ सौन्दर्यपरम्परा सँ संवाद करैत अपन रूप बनबैत अछि। तथापि साहित्यिक इतिहासमे प्रभावक दावा लेल केवल विषयक मेल पर्याप्त नहि; रचनाक कालक्रम, उपलब्ध पाठ आ विशिष्ट रूपक समानताक प्रमाण आवश्यक अछि। गजेन्द्रक चर्चा एहि प्रश्नक दायरा खोलैत अछि, आ कतिपय निष्कर्षक पुनःसत्यापन शेष रहैत अछि।

'आलोचनाक संकट आ संकट आलोचना' सन विषय साहित्यिक संस्थासँ सेहो सम्बन्धित अछि। व्यक्तिनिष्ठ प्रशंसा, गुटीय सहमति आ बिना पाठ-जाँचक निर्णय आलोचनाक विश्वसनीयता घटबैत अछि। एही मानक पर गजेन्द्रक अपन पुस्तककें परखल जाए तँ आलोचनाक मूल्यांकन अधिक निष्पक्ष बनैत अछि।

७. रामकाव्य, बिम्ब आ अनुशीलनक प्रमाण

'प्रथम पुरुष'क रामकाव्य-विचारक विवेचनमे गजेन्द्र अनेक स्रोतक सम्बन्ध पर ध्यान दैत छथि। मैथिली रामायणक काव्यरूप केवल कथा-कालक पुनरावृत्ति नहि; भाषा, सामाजिक भाव, पात्रक स्वर आ धार्मिक व्याख्या ओकर स्वतंत्र कृति बनबैत अछि। दू ग्रन्थमे कथानक समान रहलासँ प्रत्यक्ष पाठ-उधार सिद्ध नहि होइत। साहित्यिक प्रभावक विश्लेषणमे विन्यास, विशिष्ट पद आ कालक प्रमाण चाही।

बिम्ब-विधानक समीक्षा सेहो तखन उपयोगी अछि जखन बिम्बक ध्वनि, अर्थ आ संवेदनाक क्रम सम्यक् पढ़ल जाए। 'सुभद्र-हरण' सन पाठक नाम मात्रसँ रूप-

विश्लेषण सम्भव नहि। गजेन्द्रक शास्त्रीय पद्धति एहि अर्थक सूत्र सुझबैत अछि; स्थिर निर्णय लेल चयनित मूल पाँतिक संयुक्त साक्ष्य अधिक लाभकारी होएत।

८. 'नाटक आ रंगमंच' : पाठसँ प्रदर्शन धरि

वीरेन्द्र मल्लिकक नाट्यग्रन्थमे मैथिली रंगमंचक स्थिति, एकांकी, नाट्यालोचनाक प्रतिमान, लोकनाट्य, महेन्द्र मलंगियाक रंगशिल्प आ रंगभाषा, कलकत्ता रंगपरम्परा, लोकगीत आ लोकसंगीतक अध्ययन भेटैत अछि। गजेन्द्र एहि सामग्रीकेँ संस्थागत रंगइतिहास आ सौन्दर्यशास्त्रक संग पढैत छथि। नाटक लिखल जाएब आ नाटक मंचित होएब दू पृथक घटना अछि; मुद्रित पाठमे कलाकारक शरीर, दर्शकक प्रतिक्रिया आ संगीतक समय पूरा उपस्थित नहि रहैत।

‘ऑपरेशन’ अथवा ‘डीएनए टेस्ट’ जेकाँ रूपकात्मक आलोचनात्मक शीर्षक गम्भीर शोधक प्रश्न उठबैत अछि। ई शब्द वैज्ञानिक विधिक प्रत्यक्ष परीक्षण नहि, आलोचनात्मक रूपकक संकेत अछि। गजेन्द्रकेँ एहि भेदक प्रति सजग रहब पडैत अछि। लोकगीतक संरचना, रंगभाषाक काज आ संस्था-संस्कृतिक सम्बन्ध देखब एहि ग्रन्थक सबल सम्भावना अछि।

महेन्द्र मलंगियाक रंगभाषापर चर्चा शास्त्रीय भाषा बनाम जीवित मैथिली बोलचालक सीमारेखा जाँचबाक अवसर दैत अछि। रंगभाषाक जीवितता शब्दकोशीय शुद्धता मात्र नहि; संवादक सामाजिक स्वर, अभिनेता-स्वर आ मंचीय स्थितिसँ बनैत अछि। एहि रूपमे गजेन्द्रक पुस्तक साहित्यालोचनाकेँ प्रत्यक्ष प्रदर्शन-विमर्शक आगाँ लऽ जाइत अछि।

९. विद्यापतिक प्रेम आ सौन्दर्य : नौ अध्यायक मूल प्रश्न

‘प्रेम सौन्दर्य विधायक विद्यापति’क गजेन्द्र द्वारा कएल विवेचन प्रथम अध्यायक अवधारणात्मक प्रेम-सौन्दर्य सँ आरम्भ होइत अछि। मनोवैज्ञानिक अध्ययन, राधा-कृष्ण सम्बन्ध, शृङ्गारक रूप, काव्यशास्त्रीय परम्परा, लोकचेतना आ उत्तरवर्ती प्रभावक नौ अध्याय एक पैघ अवधारणात्मक संसार बनबैत अछि। एतय गजेन्द्रक प्रमुख योग ई अछि जे ओ विषयकेँ केवल रसक परम्परागत संज्ञामे सीमित नहि राखैत; सामाजिक आ ऐतिहासिक अर्थ सेहो खोजैत छथि।

मुदा प्रेमक शब्दक दार्शनिक विस्तार कखनो पाठकें ढाँकि सकैत अछि। पदक कथन-स्थिति, नायिका आ सखी बीचक सम्बन्ध, मौसम, समय आ सम्बोधनक सूक्ष्मतर रूप बिना सौन्दर्यक सिद्धान्त सामान्य चर्चा बनि जाएत। गजेन्द्रक अध्यायवार अध्ययन ओही कारण उपयोगी अछि जतय ओ अवधारणा सँ विशिष्ट पदक भाषिक घटना धरि पहुँचैत छथि।

शृङ्गारक उन्मुक्तता आ लोकचेतनाक बीच अनिवार्य विरोध मानब उचित नहि, मुदा सहज समानता मानब सेहो अनुचित। समाजक रूढ़ि, स्त्रीक कथात्मक आवाज आ पुरुष-कविक दृष्टिक पारस्परिक तनाव पढ़ल जाए। एहि प्रश्नक खुलापन विद्यापतिक आधुनिक आलोचनाकें समृद्ध करैत अछि।

१०. प्रभाव, परम्परा आ प्रमाणक मर्यादा

विद्यापतिक परवर्ती प्रभावक चर्चा साहित्येतिहासक संवेदनशील क्षेत्र अछि। कोनो उत्तरवर्ती कविक पदमे प्रेम, राधा वा ऋतुचित्र भेटलासँ विद्यापतिक प्रत्यक्ष प्रभाव सिद्ध नहि होइत; ओकर व्यापक साहित्यिक परम्परा सेहो सम्भव अछि। गजेन्द्रक अनुशीलन एहि प्रकारक तुलनाक उपयोगी विषय प्रस्तुत करैत अछि। मगर निष्कर्षक विश्वसनीयता लेल पाठान्तर, कालक्रम आ विशेष भाषिक समानताक तुलनात्मक साक्ष्य चाही।

विद्यापति-विमर्शमे जीवनी, लोकश्रुति आ काव्य-वक्ता प्रायः एक-दोसरमे घुलि जाइत अछि। गजेन्द्रक आलोचना जखन एहि अलगावकें बचबैत अछि तखन साहित्यिक विवेक स्थापित होइत अछि। ई मानक हुनकर सम्पूर्ण पाँच-पुस्तकीय अध्ययन पर लागू कएल जा सकैत अछि।

११. पचपन कविताक समीक्षामे संख्या आ अर्थ

गजेन्द्रक 'अग्नि-शिखा' पर पचपन कविताक पृथक विवेचन परिश्रमक दृष्टिएँ उल्लेखनीय अछि। मुदा कवितावार विश्लेषणक कसौटी हर रचनाक विशिष्ट बिम्ब, वक्ता, कथन-प्रसंग आ भावक परिवर्तन अछि। 'साँझ'क सौन्दर्य आ 'नक्सलाइट'क राजनीतिक संकेत एकरूप 'अग्नि'क सहारे समझलासँ अन्तर घटि सकैत अछि। कविक भाषा एकही प्रतीककें विभिन्न ताप दैत अछि; समीक्षकक काम ओहि तापक भेद देखब अछि।

समाजक अन्याय पर लिखल कविता एकटा नैतिक स्थिति व्यक्त करैत अछि; ओकर शब्द-विन्यास ओहि स्थितिक जटिलता निर्मित करैत अछि। अतिरंजना

कखन आवेश, कखन व्यंग्य, कखन अनुपयुक्त सरलीकरण बनेत अछि, एतय निर्णायक प्रश्न अछि। गजेन्द्रक आलोचनामे एहन भेद उठबैत स्थान मूल्यवान अछि। भविष्यक संशोधित विवेचनमे सीमित उद्धरणक संग ध्वनि आ लयक अधिक तर्कपूर्ण परीक्षण जोडल जा सकैत अछि।

१२. आलोचनाक आलोचना : 'प्रथम पुरुष' सँ सीख

वीरेन्द्र मल्लिक स्वयं जखन आधुनिक कविताक प्रतिमान, रामकाव्यक प्रभाव आ साहित्यिक संकट पर लिखैत छथि, तखन गजेन्द्रक जिम्मेदारी केवल हुनकर विचारक परिचय देब नहि। आलोचकक तर्कक भीतर प्रयुक्त उदाहरण, मतभेद आ निष्कर्षक तार्किक दूरी पहचानल चाही। 'परम्परा' शब्द एकटा एकरूप निधि नहि; अलग युग आ सामाजिक समूहमेसँ बनल अनेक प्रवाहक संगठित नाम अछि। आधुनिकताकेँ ओकर सरल प्रतिद्वन्द्वी मानब पर्याप्त नहि।

'प्रथम पुरुष'क अन्तर्गत समाविष्ट साक्षात्कारकेँ प्रबन्धात्मक निबन्धक बराबर साक्ष्य नहि देल जाए। साक्षात्कारमे आत्मव्याख्या, तत्कालीन प्रश्न आ स्मरणक चयन कार्य करैत अछि। गजेन्द्रक अध्ययन जखन एहि भेदकेँ रखैत अछि, तखन साहित्यिक व्यक्तित्वक अध्ययन व्यक्ति-पूजासँ बचैत अछि।

१३. विद्यापतिक सौन्दर्य आ समाजक अन्तर्विरोध

विद्यापतिक प्रेमकाव्य पर आधुनिक साहित्यिक विमर्शमे मनोविज्ञान, सामाजिक सम्बन्ध आ लोकचेतनाक चर्चा सहज रूपेँ उपस्थित अछि। मुदा आधुनिक अवधारणाकेँ मध्यकालीन पदक ऐतिहासिक आवाजक स्थानपर राखल नहि जाए। गजेन्द्रक पदानुक्रमिक अध्यायक लाभ अछि, जे ओ विभिन्न तर्कक परस्पर निकटता देखबैत छथि; सीमा अछि, जे कखनो अवधारणाक सामान्यता विशिष्ट पदक अर्थ पर हावी भऽ सकैत अछि।

नायिकाक 'हम' काव्यक निर्मित स्वर अछि। ओकर प्रतिरोधक अर्थ पाँतिक भाषा आ कथनक परिस्थिति सँ निर्धारित होएत, कविक कल्पित निजी जीवनसँ नहि। कविक बादक प्रभावक चर्चा करैत कालो समान सावधानी चाही। प्रसिद्ध पदक भावक साम्य कतहु व्यापक परम्पराक परिणाम हो सकैत अछि, प्रत्यक्ष अनुकरणक नहि। साहित्यिक इतिहासक निर्णयकेँ एही बहुविकल्पीय सम्भावना मानबाक चाही।

१४. व्यापक निष्कर्ष

‘नित नवल वीरेन्द्र मल्लिक’क विशिष्ट उपलब्धि कवि आ आलोचकक एकहि व्यक्तित्वक अनेक रूपकें स्वतंत्र मूल्य देब अछि। जनसंघर्षक कविता, कविता पर आत्मचिन्तन, रामकाव्यक आलोचना, रंगसंस्थाक इतिहास आ विद्यापतिक प्रेमदृष्टि एकमेव विचारधाराक उदाहरण नहि, परस्पर प्रश्न करनिहार क्षेत्र अछि। गजेन्द्र ठाकुरक ग्रन्थ एहि संवादकें विस्तार दैत अछि।

एकर सीमा साक्ष्यक असमान घनत्व आ किछु ठाम शास्त्रीय अवधारणाक अत्यधिक प्रसारमे देखाइत अछि। एहि कारण पुस्तकक उपयोग आलोचनात्मक सहयोगी रूपमे सर्वाधिक होएत, अन्तिम निर्णायक प्राधिकार रूपमे नहि। आशीष अनचिन्हारक निर्णयमे गजेन्द्रक अध्ययन मैथिली साहित्य पर सूक्ष्म, बहुविध प्रश्न दैत अछि; ओकर सर्वश्रेष्ठ उत्तर नहि, प्रश्न करबाक क्षमता ओकर टिकाउ उपलब्धि अछि।

सन्दर्भ-सूची

ठाकुर, गजेन्द्र। नित नवल वीरेन्द्र मल्लिक। विदेह, २०२६। (समीक्षाधीन मुख्य पोथी)।

गजेन्द्र ठाकुरक उक्त ग्रन्थमे विचाराधीन प्रमुख रचनासभ :

१. वीरेन्द्र मल्लिक। अग्नि-शिखा।
२. वीरेन्द्र मल्लिक। अथातो काव्य जिज्ञासा।
३. वीरेन्द्र मल्लिक। प्रथम पुरुष।
४. वीरेन्द्र मल्लिक। नाटक आ रंगमंच : प्रकृति आ प्रतिमान।
५. वीरेन्द्र मल्लिक। प्रेम सौन्दर्य विधायक विद्यापति।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-६८

‘अग्नि-शिखा’ आ ‘अथातो काव्य जिज्ञासा’क कविता-पाठ
‘प्रथम पुरुष’ आ रंगमंच-विषयक आलोचना
विद्यापतिक प्रेम आ सौन्दर्यपर साहित्यिक विवेचन
मैथिली साहित्यक स्रोताधारित समीक्षाक व्यापक प्रस्तुति।

मूल पाठ □ विस्तृत आलोचना □ सम्पादकीय चयन



विदेह



विदेह डिजिटल संग्रह